डा0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या (उ0प्र0)

विद्यावारिधि उपाधि (पीएच0डी0) के संदर्भ में शोधग्रंथ की मुद्रण–अपेक्षाओं व प्रारुप का विस्तृत निदर्श

शोधग्रंथ की तैयारी के संदर्भ में शोधार्थियों को उपलब्ध कराए जा रहे आवश्यक दिशानिर्देश

डा0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या

पीएच0डी0 शोधग्रंथ की विनिर्मिति के संदर्भ में मुद्रण अपेक्षाओं व प्रारुप का ब्यौरा

शोधग्रंथ की हार्डकवर की 05 प्रतियां विभाग में अनिवार्यतः प्रस्तुत की जाएंगी।

1. मुखपृष्ठ – (सुनहरे प्रिंट के साथ हार्डकवर जिल्द) – अनुलंग्नक-I
2. शोधग्रंथ–मेरुदण्ड–प्रारुप – शोधग्रंथ शीर्षक (बाएं) शोध अध्येता का नाम (मध्य) वर्ष (दाएं)
3. आंतरिक मुखपृष्ठ – (मुखपृष्ठ के समान ही ए–4 पृष्ठ पर मुद्रित)
4. शोध–अध्येता का वचनबंध – अनुलंग्नक–II
5. घोषणा–पत्र – अनुलंग्नक–III
6. शोधनिर्देशक का प्रमाणपत्र (विभागीय लेटर हेड पर) अनुलंग्नक–IV
7. सह–शोधनिर्देशक का प्रमाणपत्र, यदि लागू हो तो (विभागीय लेटर हेड पर) अनुलंग्नक–V
8. कोर्सवर्क व तत्संबंधी परीक्षा की पूर्णता का प्रमाणपत्र – अनुलंग्नक–VI
9. शोधग्रंथ के प्रस्तुतिपूर्व (प्री–पीएच0डी0 होने का) प्रमाणपत्र – अनुलंग्नक–VII
10. कॉपीराइट प्रमाणपत्र – अनुलंग्नक–VIII
11. आभार ज्ञापन
12. प्रस्तावना
13. विषयानुक्रम
14. संक्षिप्तिकाओं, सिम्बल्स, फोटो व तालिकाओं की सूची
15. शोधग्रंथ–सार
16. टेक्स्ट या पाठ (अध्यायों व भागों में विभाजित)
17. संदर्भ सूची
18. 05 सी0डी0/डी0वी0डी0 में पी0डी0एफ0 प्रारुप में 08 एम0बी0 से कम में शोध ग्रंथ की सॉफटकापी – अनुलंग्नक–IX
19. विश्वविद्यालय द्वारा प्रदत्त साहित्यिक चोरी न किए जाने के संबंध में प्रमाण पत्र, जिसके अभाव में शोधग्रंथ विभाग में प्रस्तुत नहीं किया जा सकेगा। शोधार्थियों को अपने ज्ञान क्षेत्र के अंतर्गत व्यवहार में आने वाली उद्धरण शैली (साइटेशन) का प्रयोग करने की सलाह दी जाती है –

क्रमांक	शोध उपाधि का नाम	उद्धरण शैली (साइटेशन स्टाइल)
01	प्रबंधन व उद्यमिता संकाय	American Psychological Association (APA)
02	जैव विज्ञान व जैव तकनीकी संकाय	Vancouver
03	विधि संकाय	Indian Law Institute (ILI)
04	शिक्षा संकाय	American Psychological Association (APA)
05	अभियांत्रिकी व प्रौद्योगिकी	IEEE
06	विज्ञान व प्रौद्योगिकी	IEEE
07	अनुप्रयुक्त कला, पत्रकारिता व जनसंचार, मानविकी व समाज विज्ञान संकाय	American Psychological Association (APA) Modern Language Association (MLA)

20. शोधग्रंथ की प्रकाशित/स्वीकृत/प्रस्तुत सूची –
(प) जर्नल्स – शोधार्थी के शोध कार्य से संबंधित न्यूनतम दो शोधपत्रों का रेफरीड जर्नल्स में स्वयं के प्रथम लेखक व शोध निर्देशक के संगत लेखक/सहलेखक के रुप में डा0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के पीएच0डी0 विनियमन के अनुसार प्रकाशन।
(पप) सेमिनार/संगोष्ठी – पीएच0डी0 कार्य से संबंधित दो शोधपत्रों की सेमिनारों में प्रस्तुति।

21. शोधपत्र–प्रकाशन के स्वीकृत होने की स्थिति में स्वीकृति–पत्र की प्रति।
22. प्रकाशित/स्वीकृत शोधपत्रों के मूल/रीप्रिंट के प्रथम पृष्ठ की प्रति।
23. शोध–अध्येता का एक पृष्ठ से अनधिक का फोटोग्राफ सहित आत्मवृत्त

टंकण/मुद्रण अपेक्षाएं :–

- टेक्स्ट या पाठ – कृतिदेव
- पृष्ठ के केवल एक ओर मुद्रित
- अध्याय विभाजक पृष्ठ – कृतिदेव

पेपर चयन :–
शोधग्रंथ की मूलप्रति का टंकण ए–4 सफेद कागज (80 जी0एस0एम0–100 जी0एस0एम0) पर होना चाहिए।

हाशिया मार्जिन :–

- टंकित पाठ अनिवार्यतः जस्टीफाइड होना चाहिए।
- बायीं तरफ मार्जिन 1.25'' और दायीं तरफ् शीर्ष व आधार पर 1'' होगा।
- पृष्ठ के निचले भाग में उपशीर्षक दिए जाने के पश्चात कम से कम दो पूर्ण पंक्तियां टंकित हो सकनी चाहिए। यदि पृष्ठ का निचला शेष रिक्त स्थान दो पूर्ण पंक्तियों व 1'' मार्जिन के समावेशन की अनुमति नहीं देता, तो उपशीर्षक अगले पृष्ठ से प्रारम्भ किया जाएगा। इसी प्रकार पृष्ठ के निचले भाग में एक नया पैराग्राफ तभी प्रारम्भ किया जा सकेगा जब उसके बाद कम से कम दो पंक्तियां 1'' मार्जिन के साथ पूर्ण की जा सकें,

अन्यथा यह नये पृष्ठ से प्रारम्भ होगा। किसी पैराग्राफ के अंतिम कुछ शब्दों को समाप्ति के लिए नये पृष्ठ पर नहीं ले जाया जा सकता है। नये पृष्ठ पर पैराग्राफ को ले जाने के लिए न्यूनतम दो पंक्तियां आवश्यक होंगी।

पृष्ठ अंकन :–

- शीर्षक पृष्ठ को छोड़कर, प्रत्येक पृष्ठ आवश्यक रुप से संध्यांकित होना चाहिए। शीर्षक पृष्ठ के (i) से अंकित किया जा सकेगा।
- प्रारंभिक पृष्ठों–शोधार्थी का वचनबंध, घोषणापत्र, शोध निर्देशक प्रमाण पत्र, कॉपीराइट प्रमाणपत्र, विषय सूची, तालिका सूची, शोधसार आदि को पृष्ठ के आधारतल से 0.83'' की दूरी पर मध्य में रोमन अंकों (लोअर केस i, ii, iii, iv)से प्रदर्शित किया जाएगा।
- शेष पृष्ठों यथा पाठ, उदाहरणों, परिशिष्ट एवं संदर्भ सूची को पृष्ठ के सबसे नीचे मध्य में क्रमागत अंकों (1,2,3 आदि) से प्रदर्शित किया जाएगा।

अंतरालन/स्पेशिंग :–

- टंकित पाठ की दो पंक्तियों के बीच अंतराल 1.5'' होगा।
- निम्नलिखित विषयों में पंक्तियों के बीच अपवादस्वरुप एकल–अंतराल किया जाएगा :–
  तालिका व आकृति शीर्षक
  आवश्यक रुप से तालिका सामग्री
  परिशिष्ट सामग्री

इण्डेंटेशन/आरम्भ–विचलन :–

समस्त पैराग्राफस की प्रथम पंक्ति टंकण में 0.5'' का स्थान छोड़कर प्रारम्भ होगी।

तालिका व आकृति :–

परिभाषा :

- तालिका शब्द का प्रयोग शोधग्रंथ व परिशिष्टों में सारणीबद्व आंकड़ो के लिए होगा।
- आकृति शब्द शोधग्रंथ व परिशिष्टों के अंतर्गत उन समस्त व्याख्यात्मक सामग्री के लिए अभिहित होगा जिसमें ग्राफ, चार्ट, रेखाचित्र व आरेख आदि सम्मिलित होंगे।

निर्माण :–

- मार्जिन नियमों की अनुरुपता में , समस्त तालिकाएं व आकृतियां, अंक व शीर्षकों को सम्मिलित करते हुए 6'' गुणा 9'' के क्षेत्र में समंजित की जायेंगी।
- तालिकाओं व आकृतियों में जहां सामग्री अत्यंत विस्तृत होने के कारण मार्जिन अपेक्षाओं से सुसंगत नहीं होगी, वहां या तो इसे जैरोग्राफी से या फिर वर्ड प्रोसेसिंग प्रोग्राम्स के द्वारा (फान्ट की पाइन्ट साइज को कम करते हुए) संक्षिप्त किया जा सकेगा। यह सावधानी अवश्य रखनी होगी कि यह संक्षेपण सुपाठय व दृश्यता में स्पष्ट हो।
- पृष्ठ–संख्या, तालिका–शीर्षक व आकृतियों के अनुशीर्षक निश्चित रुप से शेष टेक्स्ट की साइज के मानदण्डों के अनुसार ही होंगे (अर्थात कम नहीं किए जाएंगे)

स्थापना / प्लेसमेन्ट :–

- तालिका व आकृतियां आवश्यक रुप से क्षैतिज क्रम में (लैंडस्केप) व्यवस्थित होगी जो पृष्ठ के वाहय कोरों की ओर अभिमुख होंगी और जिनका जिल्दबंदी के छोर पर अधिकतम अंतराल होगा।
- तालिका एवं आकृतियों को जो लम्बाई में डेढ़ पृष्ठों से कम होंगी, उन्हें टेक्स्ट को यथावत समायोजित करते हुए और ऊपर या नीचे के टेक्स्ट से दुहरे अंतराल पर रखते हुए, उसी पृष्ठ में सम्मिलित किया जाएगा। यदि उसकी लम्बाई आधे पृष्ठ से अधिक होगी तो उन्हें पृथक पृष्ठ में स्थान दिया जाएगा। दो या दो से अधिक लधु आकार की तालिकाएं व आकृतियां एक ही पृष्ठ में समायोजित की जा सकती हैं।
- तालिका व आकृतियों का स्थापन पृष्ठ क्रमांक को प्रभावित नहीं करेगा।

क्रमांक / नम्बरिंग :–

- शोधग्रंथ के विवरण में आने वाली तालिकाओं व आकृतियों का संदर्भ आवश्यक रुप से टेक्स्ट में होना चाहिए और दिए गए निकटतम संदर्भों में यथास्थान उनका अंकन होना चाहिए।
- तालिका संख्या व शीर्षकों की संगति APA/IEEE/CHICAGO/MLA/ILI/Vancouver आदि के प्रारुपों से रखनी होगी।
- आकृति संख्या व अनुशीर्षकों की संगति PA/IEEE/CHICAGO/MLA/ILI/Vancouver आदि के प्रारुपों से होगी।
- तालिका व आकृतियों के क्रम अंकन के लिए पृथक श्रंखलाएं होंगी। प्रत्येक तालिका या आकृति, भले ही वे किन्हीं अनुलंग्नक के अंतर्गत हों, की पृथक अंक श्रंखला होगी। प्रत्येक श्रंखला अध्याय के भीतर रखते हुए क्रमानुगत रुप से अरेबिक संख्याओं में अंकित होगी (उदाहरण आकृति 10.1, आकृति 10.2 व आकृति 10.3 आदि)
- प्रत्येक तालिका व आकृति को पृथक रुप से क्रमांकित किया जाएगा। आकृति को एक ही पृष्ठ में पूर्ण करना होगा।
- यदि किसी तालिका का विस्तार अगले पृष्ठ में होता है तो शीर्ष पंक्ति को तालिका 10.1 (क्रमशः) पढ़ा जाएगा। शीर्षक का दुहराव नहीं होगा लेकिन स्तम्भ–शीर्षक को दुहराया जा सकेगा।

शीर्षक व अनुशीर्षक :–

- तालिकाओं का अभिज्ञान तालिका शब्द से होगा और वे क्रमागत रुप से अरेबिक संख्याओं का उपयोग करते हुए अंकित होंगे। तालिका संख्या दिए जाने के बाद दोहरा अंतराल होगा और तालिका शीर्षक को निर्यक मुद्रण (इटेलिक्स) से प्रदर्शित किया जाएगा। तालिका शीर्षक के मानदण्डों के लिए APA/IEEE/CHICAGO/MLA/ILI/Vancouverनियमावली को देखा जा सकता है।
- आकृतियों का अभिज्ञान आकृति शब्द से होगा और वे क्रमागत रुप से अरेबिक संख्याओं का उपयोग करते हुए अंकित की जायेंगी। आकृति शब्द और उसकी संगत संख्या निर्यक–मुद्रण (इटैलिक्स) में अंकित होगी। आकृति के अनुशीर्षक

आकृति–क्रमांक की पंक्ति मे ही अंकित किए जा सकेंगे। अनुशीर्षक निर्यक (इटैलिक्स) मुद्रित नहीं होंगे। आकृति के अनुशीर्षक आकृति के नीचे व्यक्त किए जाएंगे।

- ये सभी शीर्षक/अनुशीर्षक तालिका–सूची या आकृति–सूची के आरंभिक पृष्ठों में प्रदर्शित किए जाएंगे।

उद्धरण :–

- टेक्स्ट में किसी तालिका या आकृति को संदर्भित करते हुए पूर्ण शब्दों व अंको का उपयोग किया जाएगा (उदाहरण तालिका 10 या आकृति 6)। तालिका या आकृति का संदर्भ तालिका या आकृति की स्व–स्थानिकता से आवश्यक रुप से पूर्ववर्ती होगा।

अनुलंग्नक–II

शोध अध्येता द्वारा प्रस्तुत वचनबंध–पत्र

मैं, ...नाम..... एतद्द्वारा घोषणा करता/करती हूं कि मैंने डा0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय की विद्यावारिधि उपाधि के लिए .....शोध शीर्षक..... ..... विषय पर अपना शोधकार्य .....शोध निर्देशक..... . के निर्देशन में पूर्ण कर लिया है।

यह मेरा मौलिक कार्य है और पूर्व में इसे मैंने कहीं और प्रस्तुत नही किया है।

दिनांक : ..... **शोध अध्येता के हस्ताक्षर .....**

स्थान : ..... **शोध अध्येता का नाम .....**

अनुलंग्नक–III

वचनपत्र

मैं, ...(शोधार्थी का नाम)..... पुत्र .....(पिता का नाम).....व .....(माता का नाम)..... प्रमाणित करता हूं कि डा0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या की विद्यावारिधि उपाधि के लिए प्रो0/डॉ0 ....के शोध निर्देशन व प्रो0/डॉ0 ..... के सह–शोध निर्देशन में प्रस्तुत किया गया मेरा शोधकार्य मौलिक व प्रमाणिक है। प्रस्तुत शोध दिनांक ..... से दिनांक ..... की अवधि में पूर्ण किया गया है। इस शोधग्रंथ में समाविष्ट अनुसंधान कार्य को ग्रथ में उल्लिखित उचित कृतज्ञताज्ञापन को छोड़कर, किसी अन्य डिग्री/डिप्लोमा की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं किया गया गया है।

मैं, एतदद्वारा घोषणा करता/करती हूं कि मैंने शोधग्रंथ में पूर्ववर्ती अध्येताओं के शोधकार्यो का यथास्थान उपयोग करते समय उनको उचित श्रेय देते हुए संदर्भित किया है, और साथ ही, उनके कार्य के प्रति निष्ठापूर्वक आभार ज्ञापित किया है। साथ ही, मैं यह भी प्रमाणित करता/करती हूं कि अन्यों के कार्यों, अनुच्छेदों, पाठों, आकड़ों व परिणामों आदि को जो जर्नल्स, पुस्तकों, पत्रिकाओं, प्रतिवेदनों, शोधग्रंथों या वेबसाइटस आदि में प्रकाशित/उल्लिखित है, को सुविचरित रुप से उठा लेते हुए इस शोधग्रंथ में अपने मौलिक कार्य के रुप में उपयोग नहीं किया है।

दिनांक : .....

स्थान : .....

शोध अध्येता के हस्ताक्षर.....

शोध अध्येता का नाम.....

नामांकन संख्या .....

पंजीकरण की तिथि .....

जमा करने की तिथि .....

अनुलंग्नक–IV

शोध निर्देशक द्वारा प्रस्तुत प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि ..... (शोधार्थी का नाम) ..... ने मेरे शोध निर्देशन में डा0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या के ..... (शोध केन्द्र का नाम) ..... शोध केन्द्र के अंतर्गत दिनांक ..... से दिनांक ..... की अवधि में अपना शोधकार्य पूर्ण किया है। प्रस्तुत शोध विद्यावारिधि (क्षेत्र/विषय)..... उपाधि हेतु शोध विषय के रुप में स्वीकृत ..... (शोध विषय शीर्षक) ..... विषय पर सम्पन्न किया गया है।

मेरी सर्वोत्तम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार, यह शोधकार्य मौलिक है ओर इसे आंशिक या पूर्ण रुप से किसी अन्य विश्वविद्यालय/संस्था की उपाधि या डिप्लोमा के लिए इससे पूर्व प्रस्तुत नहीं किया गया है।

दिनांक .....

शोध निर्देशक के हस्ताक्षर .....

शोध निर्देशक का नाम .....

पदनाम, संस्था का नाम .....

अनुलंग्नक–V

सह–शोध निर्देशक द्वारा प्रस्तुत प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि ..... (शोधार्थी का नाम) .... ने मेरे सह–शोध निर्देशन में डा0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या के ....(शोध केन्द्र का नाम) ..... शोध केन्द्र के अंतर्गत दिनांक .....से दिनांक ..... की अवधि में अपना शोधकार्य पूर्ण किया है। प्रस्तुत शोध विद्यावारिधि .....(क्षेत्र/विषय)..... उपाधि हेतु शोध विषय के रुप में स्वीकृत .....(शोध विषय शीर्षक) .... विषय पर सम्पन्न किया गया है।

मेरी सर्वोत्तम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार, यह शोधकार्य मौलिक है ओर इसे आंशिक या पूर्ण रुप से किसी अन्य विश्वविद्यालय/संस्था की उपाधि या डिप्लोमा के लिए इससे पूर्व प्रस्तुत नहीं किया गया है।

दिनांक .....

सह–शोध निर्देशक के हस्ताक्षर .....

सह–शोध निर्देशक का नाम .....

पदनाम, संस्थाका नाम .....

अनुलंग्नक–VI

पाठयक्रम व तत्सम्बन्धी परीक्षा की सम्पन्नता का प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि ..... (शोधार्थी का नाम) .... नामांकन संख्या .....डा0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या के ....(शोध केन्द्र का नाम) ..... शोध केन्द्र पर विद्यावारिधि उपाधि के लिए पंजीकृत छात्र/छात्रा हैं।

इन्होंने सफलतापूर्वक अपना पाठयक्रम व इसके अनन्तर आयोजित की गई परीक्षा, जो इनके पीएच0डी0 पाठयक्रम का अंग है, को पूरा कर लिया है।

दिनांक : .....

विभागाध्यक्ष के हस्ताक्षर.....

विभागाध्यक्ष का नाम .....

संस्था का नाम .....

अनुलंग्नक–VII

शोधग्रंथ प्रस्तुत पूर्व संगोष्ठी–सहभागिता का प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि ..... (शोधार्थी का नाम) .... नामांकन संख्या .....डा0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या के ....(शोध केन्द्र का नाम) ..... शोध केन्द्र पर विद्यावारिधि उपाधि के लिए पंजीकृत छात्र/छात्रा हैं।

इन्होंने अपना शोधग्रंथ .....(शीर्षक) ..... प्रस्तुत किए जाने से पूर्व दिनांक ..... को आयोजित सेमिनार में प्रतिभाग कर लिया है, जो इनके पीएच0डी0 पाठयक्रम का अंग है।

दिनांक : .....

विभागाध्यक्ष के हस्ताक्षर.....

विभागाध्यक्ष का नाम .....

संस्था का नाम .....

अनुलंग्नक–VIII

कॉपीराइट अंतरण प्रमाणपत्र

शोधग्रंथ का शीर्षक .....

शोध अध्येता का नाम .....

नामांकन संख्या .....

कॉपीराइट अंतरण

एतदद्वारा अधोहस्ताक्षरी विद्यावारिधि उपाधि के लिए प्रस्तुत किए गए अपने शोधग्रंथ के कॉपीराइट का अधिकार डा0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या, उत्तर प्रदेश को सौंपता हूं।

शोध अध्येता के हस्ताक्षर.....

शोध अध्येता का नाम .....

दिनांक .....

टिप्पणी :– यद्यपि, लेखक स्वयं या अन्यों को अधिकृत कर सकता है कि वे शोधग्रंथ से शब्दशः सामग्री को पुनः प्रस्तुत करते हुए या शोधग्रंथ से व्युतपादित सामग्री को लेखक के निजी उपयोग के लिए लेते हुए स्त्रोत व विश्वविद्यालय के कॉपीराइट सूचना का उल्लेख करें।

अनुलंग्नक–IX

महत्वपूर्ण सूचना

विश्वविद्यालय में प्रस्तुत किए जाने वाले शोधग्रंथ की प्रत्येक प्रति के साथ सी0डी0/डी0वी0डी0 में इसकी पी0डी0एफ0 प्रति को अंतिम कवरपृष्ठ के साथ संलग्न करना होगा। पी0डी0एफ0 प्रारुप में शोधग्रंथ की अंतर्वस्तु को सी0डी0/डी0वी0डी0 में निम्न प्रकार से प्रस्तुत करना होगा :–

1. सम्पूर्ण शोधग्रंथ के पी0डी0एफ0 प्रारुप की एक फाइल जो 8 एम0बी0 साइज से बड़ी न हो।
2. सम्पूर्ण शोधग्रंथ के अध्याय पृथ्क पृथ्क निम्न प्रकार से प्रस्तुत करना होगा :–

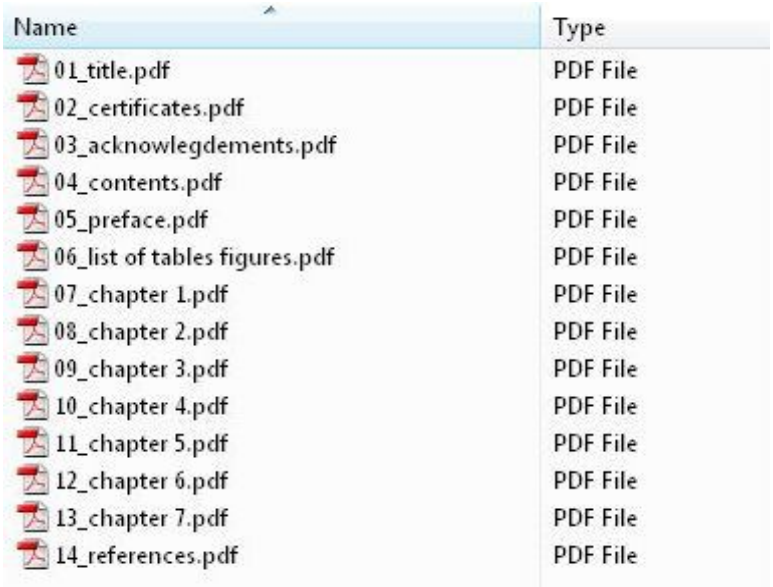

अनुलंग्नक–X

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि .....शोधार्थी का नाम ..... नामांकन संख्या .....ने .....(निर्देशक का नाम)..... के निर्देशन में .....विषय..... .....पर शोध कार्य किया। इनके द्वारा प्रस्तुत शोधग्रंथ की साहित्यिक चोरी से सम्बन्धित निरीक्षण Urkund Software के माध्यम से करा लिया गया है। कुल समानता–पायी गयी जो विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (उच्चतर शिक्षा संस्थानों में अकादमिक सत्यनिष्ठा एवं साहित्यिक चोरी की रोकथाम को प्रोत्साहन) विनियम 2018 दिनांक 23 जुलाई, 2018 के अन्तर्गत स्तर–शून्य (दस प्रतिशत तक समानता) के अनुरुप है।

अतः शोधग्रंथ .....विषय..... को विद्या वारिधि की उपाधि हेतु विश्वविद्यालय में मूल्यांकन हेतु जमा किये जाने की संस्तुति प्रदान की जाती है।

विभागाध्यक्ष/संकायाध्यक्ष **शोध निर्देशक** **विश्वविद्यालय के सक्षम अधिकारी**